मानव सेवा के व्रतधारी—

महात्मा एन्डरूज

366

સી.જે. પટેલ Mo. 98252 78824
પટેલ ઓટો એડવાઈઝર
એમ જી. રોડ, ખટારા સ્ટેન્ડ,
કડીયાલાઈન, ગાયત્રી ચેમ્બર્સ, ગોંડલ.
ફોન: ઓ. ૨૨૦૪૭૮ રેસી. ૨૨૦૦૯૨

(834)



लेखक—
श्री सत्यभक्त

युग निर्माण योजना मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मानव सेवा के व्रतधारी महात्मा एण्डरूज

धर्म के अनेक मार्ग हैं। जिनमें से हम किसी को भी अपनी मनोवृत्ति के अनुसार अपना सकते हैं। आवश्यकता इतनी ही है कि जिस किसी मार्ग को हम अपनावें उसका सच्चे हृदय से शुद्धतापूर्वक पालन करें। हमारे अनेक धार्मिक उपाख्यानों में दर्शाया गया है कि अनेक हीन व्यवसाय करने वाले व्यक्ति अपने पेशे की पूरी सचाई के साथ करने के फलस्वरूप महान् धार्मिक मान लिये गये। जब जीवन-निर्वाह के साधारण कार्यों में सचाई बर्तने की ऐसी विलक्षण शक्ति है तो जिसने मानव-सेवा--परोपकार को ही जीवन का एकमात्र ध्येय बना लिया है और उसके लिये सब प्रकार स्वार्थत्याग किया है, उसकी महानता का अनुमान कौन लगा सकता है ? ऐसे ही व्यक्ति जीवन्मुक्त कहे जाते हैं और स्वार्थ तथा पाप के युग में धर्म उनके सहारे ही टिकता है। दीनबन्धु एण्डरूज ऐसे ही महामानव थे।

श्री एण्डरूज (जन्म १२ फरवरी, १८७२) का पूरा नाम चार्ल्स फ्रीअर एण्डरूज था। उनके माता-पिता धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे और इनको बचपन से ही सत्यप्रेरणा दिया करते थे। छः वर्ष की आयु में उनको ऐसा कठिन ज्वर आया कि डाक्टरों ने जीवन की आशा छोड़ दी, पर माता की सेवा और प्रेम के द्वारा किसी प्रकार मौत के मुँह में से निकल आये। तथापि उनका शरीर कमजोर हो गया, जिससे कुछ परिश्रम करने में ही हाँफने लगते थे। जब उनकी आयु नौ वर्ष की थी तो एक व्यक्ति की बेईमानी से उनके घर की बहुत-सी सम्पत्ति नष्ट हो गई जिससे उनको मध्यम श्रेणी की बजाय एकदम गरीबी का जीवन बिताने को बाध्य होना पड़ा। तेरह बच्चों के परिवार का खर्च ऐसी स्थिति में चलाना बड़ा कष्टकर हो गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



ना बचपन आरम्भ तक आपकी शिक्षा घर पर माता-पिता द्वारा ही हुई इसके बाद स्कूल में भरती करा दिये गये। आप पढ़ाई में बड़ा परिश्रम करते थे, जिससे पुरस्कार और छात्रवृति पाते रहते थे। पच्चीस वर्ष की आयु में कैम्ब्रिज की अन्तिम परीक्षा पास करली। बचपन की निर्बलता के कारण आप प्रायः बीमार हो जाते थे, जिससे माता को इनकी अधिक देख-भाल करनी पड़ती थी। पर उम्र बढ़ने पर क्रिकेट आदि खेलों में भाग लेने लगे तो वह निर्बलता दूर होकर स्वास्थ्य साधारणतः ठीक हो गया।

भारतवर्ष के प्रति श्री एण्डरूज को महानुभूति न जाने क्यों बहुत छोटी आयु में ही उत्पन्न हो गई थी? उसी समय आप कभी-कभी माताजी से कहा करते थे—"माँ! मैं हिन्दुस्तान जाऊँगा।" उन्होंने किसी से सुना था कि हिन्दुस्तानी चावल बहुत खाते हैं, तो वे कभी-कभी अपनी माता से भात बनवा कर खाया करते थे। उनको चावल खाते देख कर उनकी माँ बहुत हँसती और कहती—"चार्ली! तुम किसी दिन हिन्दुस्तान जरूर जाओगे।" अब आप कालिज में पढ़ने लगे तो आपकी भारतवर्ष के दर्शनों की इच्छा और भी बढ़ गई। जब एक मित्र श्री वेस्टकौट कैम्ब्रिज-मिशन के पादरी बनकर दिल्ली आये तो आपकी इच्छा भी उनके साथ यहाँ आने की हुई।

सेवा धर्म का श्री गणेश

सन १८९५ में कालेज की पढ़ाई समाप्त करके श्री एण्डरूज ने चार वर्ष तक दीन-दुखियों की सेवा की। आपका इरादा मिशनरी बनने का था और इसके लिये आवश्यक था। कि मनुष्य दीन-दुखी लोगों के जीवन का अनुभव भली प्रकार करले और सेवा-भावना के अनुसार कुछ व्यवहारिक कार्य भी कर दिखाये। वैसे उनकी साहित्यिक योग्यता इतनी अधिक थी और कैम्ब्रिज की उच्च परीक्षाएँ ऐसे सम्मान के साथ पास की थीं कि अगर वे चाहते तो वहीं पर बड़ी अच्छी नौकरी मिल सकती थी। पर आपको धन की तरफ आकर्षण न था और गरीबों के लिये कुछ काम करने की हार्दिक अभिलाषा थी इसलिये आप सुंडरलैण्ड नामक कस्बे में जाकर निवास करने लगे जहां जहाज बनाने का कारखाना था। यह मजदूरों की एक बस्ती थी जिनमें अनेकों प्रकार के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दोष फैले हुए थे। ये लोग शराब पीते थे, जुआ खेलते थे, आपस में खूब लड़ते थे, व्याभिचार भी भयङ्कर रूप से फैला हुआ था। कारखाने के फाटक पर ही शराब की दुकानों की कतार लगी थी। शाम को मजदूर लोग जब मेहनत से थककर बाहर निकलते तो शराब की सजी हुई बोतलों को देखते ही उसके प्रलोभन में फँस जाते। श्री एण्डरूज को इन लोगों की ऐसी दुर्दशा देखकर बड़ा दुःख होता था और वे उस नर्क सदृश स्थान में रहकर उनकी स्थिति को सुधारते का जो कुछ प्रयत्न सम्भव था करते रहते थे।

उन्होंने वहां एक क्लब बनाया जिसमें शाम के समय अनेक मजदूर लड़के इकट्ठे हो जाते थे। क्लब में वे उनको तरह-तरह के खेल खिलाकर और किस्से सुनाकर शिक्षा देने का प्रयत्न करते रहते। उस समय इङ्गलैण्ड के मजदूरों का वेतन प्रायः २५ शिलिङ्ग (लगभग १८ रु० १४ आने) प्रति सप्ताह था। एसलिये एण्डरूज साहब संडरलैंड में रहकर केवल १० शिलिङ्ग प्रति सप्ताह में गुजर करते थे, क्योंकि वे अविवाहित थे। इसमें उन्हें बड़ी कठिनाई उठानी पड़ती थी और कभी-कभी भूखे भी रह जाना पड़ता था।

संडरलैंड में कुछ समय तक काम करने के बाद वे लन्दन वापस चले आये और धर्म-प्रचारक बनने की दीक्षा ग्रहण की। वे अपने ही कालेज के कैम्ब्रिज मिशन में शामिल हो गये और उसकी तरफ से नगर के 'वालवर्थ' मुहल्ले में सेवा-कार्य करने लगे। वहाँ के निवासियों में उन्होंने जिस प्रकार काम किया वह इस बात का एक शिक्षाप्रद उदाहरण है कि सज्जन पुरुष बिगड़े हुए लोगों का भी किस प्रकार सुधार कर सकते हैं। वहाँ के अनुभवों के विषय में श्री एण्डरूज ने स्वयं एकबार लिखा था—

"वालवर्थ' के निवासी प्रायः लापरवाह और फिजूलखर्च थे। मनमौजी भी खूब थे। इन्होंने शीघ्र ही मुझे अपना मित्र बना लिया और मुझ पर पूर्ण विश्वास करने लगे। ये लोग मुझे अपने घर ले जाते और सुख दुःख की बातें सुनाया करते। ये बिल्कुल निर्धन थे और मालिकों तथा दलालों के अत्याचारों से पीड़ित थे। अपने दुःखों को भूल जाने के लिये शराब पिया करते, जिससे जो पैसे बाल-बच्चों के पोषण में खर्च होने चाहिये थे वे शराबघर में पहुँच जाते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्त्री और पुरुष शराब पी-पीकर दुश्चरित्र होते जाते थे। इतवार के दिन मैं इन लोगों का एक 'क्लास' लगाया करता था। इस 'क्लास' में एक बड़ी खूबी यह थी कि कितने ही जेबकट और चोर भी इसमें भाग लिया करते थे। इन लोगों के नाम भी विचित्र थे, जैसे जिंजर, सौसेज, मिल्की, पन्जर, स्माइलर इत्यादि। मेरे यहाँ तो ये कोई बदमाशी नहीं करते थे, लेकिन बाहर इन पर विश्वास करना असम्भव था। किसी की जेब काट ली, किसी की चीज छीनकर भाग गये, किसी के यहाँ से चोरी कर लाये। तो भी मैं इन पर कभी अविश्वास नहीं करता था। मेरी लापरवाही पर ये लोग खूब हँसा करते थे और आपस में कहते थे–'एण्डरूज तो भला आदमी है, इससे कोई बात छिपाने की जरूरत कहीं और इसे धोखा भी नहीं देना चाहिये।'

गर्मी के दिनों में एकबार हम सब समुद्र या जङ्गल की तरफ यात्रा करने जाते थे। हम लोगों ने यह बात तय कर रखी थी कि इस यात्रा में कोई आदमी न जेब काटे और न इधर-उधर से चोरी करे। जब कभी ये किसी अच्छी दुकान के पास से होकर गुजरते तो उनके हाथों में खुजली-सी चलने लगती थी और वे मेरे पास आकर बड़ी खुशामद करके कहते—'मिस्टर एण्डरूज एक बार—ज्यादा नहीं बस एक बार आज्ञा दे दीजिये और फिर हम आपको दिखला दें कि हम कैसे चीजें उड़ाया करते हैं?"

ऐसे अवसरों पर वे उनको अत्यन्त कठोर बनकर नियन्त्रण में रख पाते थे। धीरे-धीरे इन लोगों की बुरी आदतें कम होती गई। वालवर्थ में काम करने के ११ वर्ष बाद जब श्री एण्डरूज भारतवर्ष में काम कर रहे थे तो इन लोगों में से दो व्यक्ति अकस्मात् ही उनको शिमला और कलकत्ते में मिल गये। वे लोग अपराधी जीवन त्यागकर सेना में भरती होकर इस देश में आ गये थे।

भारत यात्रा का उद्देश्य—

जब श्री एण्डरूज ने भारतवर्ष में काम करने का निश्चय किया तो अनेक व्यक्तियों ने इसका विरोध किया। कालेज में जो सीनियर अध्यापक थे उन्होंने बार-बार यही सलाह दी कि वे कैम्ब्रिज में ही रहें। कैम्ब्रिज के कई मुख्य सञ्चालकों ने भी यही कहा कि तुम यहीं रहकर बहुत उन्नति कर सकते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

 www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



हो, हिन्दुस्तान जाने की कोई जरूरत नही ।' उनके माता पिता भी भारत आने के विरोधी थे । पिताजी विदेशों में ईसाई धर्म के प्रचार को निरर्थक समझते थे और कहते थे कि 'तुम कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय की अच्छी नौकरी छोड़कर बड़ी भूल करते हो । जब यहीं तुम्हारी उन्नति के लिये इतना बड़ा क्षेत्र है तो इतनी दूर जाने की क्या जरूरत हैं ।' माता की इच्छा भी यही थी कि वे इङ्ग-लैंड में ही रहें पर उन्होंने उनकी अभिलाषा को समझकर कभी अधिक विरोध नहीं किया ।

श्री० एण्डरूज के हृदय में उस समय विदेशों में जाकर प्रभू ईसा का सन्देश फैलाने की इच्छा बलबती हो रही थी, क्योंकि ईसा ने कहा था—"जाओ और सम्पूपूर्ण संसार में 'बाइबिल' के ज्ञान का प्रचार करो ।" इस सम्बन्ध में उनका कहना था—"मैंने अपने दिल में सोचा कि मुझे ईसा की आज्ञा पालन करके भारतवर्ष जाना ही चाहिये । उस समय भारत से लौटे मिशनरियों की बातें सुनकर मैं यही समझता था कि वहाँ पर अज्ञान-अन्धकार छाया हुआ है और उसे दूर करने का एकमात्र मार्ग यही है कि वहाँ 'बाइबिल का प्रचार किया जाये । भारत के आध्यात्मिक-जीवन का उस समय मुझे अधिक ज्ञान न था और न यहाँ के निवासियों के नैतिक सदाचार के विषय में ही मैं विशेष रूप से कुछ जानता था ।"

सन् १९०४ में २० मार्च को बम्बई में श्री एण्डरूज ने भारतभूमि का प्रथम-बार स्पर्श किया और उसी दिन से इसे अपनी दूसरी मातृभूमि बना लिया । उनके मिशन का प्रधान कार्यालय दिल्ली में था और वहीं पर सेंट स्टोफन्स कालेज में उनको शिक्षण कार्य करना था । उन्हे कार्य करते एक वर्ष भी नहीं हुआ था कि कालेज के प्रिंसिपल साहब विलायत वापस चले गये । योग्यता और अनुभव की दृष्टि से उस स्थान पर कालेज के एक पुराने प्रोफेसर सुशीलकुमार रुद्र की नियुक्ति उचित थी, पर सचालकों की इच्छा थी कि उस पद पर कोई अँगरेज ही काम करे । इसलिये उन्होंने श्री एण्डरूज को प्रिंसिपल बनाने का प्रस्ताव किया । पर उन्होंने बहुत दबाये जाने पर भी इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया और श्री रुद्र को ही प्रिंसिपल बनाने का आग्रह किया । उन्होंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यहाँ तक कह दिया कि यदि रुद्र को प्रिंसिपल ने बनाया गया तो मैं इस्तीफा दे दूँगा । श्री एण्डरूज के एक साथी प्रोफेसर श्री वैस्टन ने भी उनका समर्थन किया । तब सञ्चालकों ने विवश होकर, श्रीरुद्र को प्रिंसिपल बनाया । पर इसके बाद भी ऐंग्लोइंडियन लोग बराबर आपको अँगरेज जाति की उच्चता का पाठ पढ़ाते रहे । ये उपदेश कैसे होते थे, यह श्री एण्डरूज के ही शब्दों में सुनिये ऐन्ग्लोइंडियन कहते थे—

"कभी किसी हालत में किसी 'नेटिव' (भारतीय) से मत दबना न कभी किसी 'नेटिव' के दिल में यह ख्याल आने देना कि वह तुमसे ऊँचा है । हम भारतवर्ष पर केवल एक ही तरीके से राज्य कर सकते हैं और वह तरीका यही है कि हम अपनी 'पोजीशन' (पद) को ऊँचा बनाए रखें । यद्यपि आप 'मिशनरी' हैं, तथापि अपने आपको पहले 'अँगरेज' समझना होगा । इस बात को कदापि न भूलें कि आप 'साहब' हैं । अगर आप किसी 'नेटिब' की अपने साथ बहुत मेल-जोल बढ़ाने देंगे या अपने साथ मनमाना व्यवहार करने देंगे तो इससे आप बेशुमार हानि पहुँचायेंगे । हिन्दुस्तानी लोग नीची जाति के हैं और हम तलवार के जोर से यहाँ राज्य करते हैं । आप उनके साथ मेहरबानी का बर्ताव भले ही करें, लेकिन हमेशा सावधान रहें और अँगरेज होने के 'प्रेस्टीज' (धाक) को कदापि न त्यागें ।"

पर श्री एण्डरूज दूसरी दुनियाँ के आदमी थे । वे सत्य तथा न्याय के अनुयायी थे और सब बातों का निर्णय अपनी आँखों से देखकर और बुद्धि से समझ कर करते थे । उन्हे ऐंग्लोइंडियन के ऐसे उपदेशों से बड़ी हैरानी होती थी । वे उत्तर देते थे—"हमें 'नेटिव' से बराबरी का व्यवहार करना ही होगा । यदि हममें ईसा के अनुरूप कुछ भी नम्रता है तो हमें यही करना पड़ेगा । हमें प्रयत्न करके अपनी उच्चता छोड़ देनी होगी । यदि हम क्राइस्ट के सच्चे अनुयायी होंगे तो हमें सबका सेवक बनना होगा । यदि हम भारतवर्ष में आते हैं तो हमारा एक ही उद्देश्य होना चाहिये अर्थात् यहाँ की विभिन्न जातियों की एकता में जो बाधायें हैं उनको मिटाना । हमारी हार्दिक इच्छा यही होनी चाहिये । इन बाधाओं को उल्टा बढ़ाना हमारा उद्देश्य हर्गिज न होना चाहिये ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारतवासियों के प्रति सहानुभूति--

गर्मी के दिनों में श्री एण्डरुज को शिमला जाना पड़ा। वहाँ एंग्लो-इंडियनों के चरित्र देखकर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा--"भारत जैसे गरीब देश में, जहाँ लाखों आदमी भूखों रह जाते हैं और जहाँ मोटे अनाज का भोजन दिन में एक बार मिल जाना भी करोड़ों लोगों को सौभाग्य का विषय जान पड़ता है--वहाँ एंग्लोइण्डियन लोगों की फिजूलखर्ची और विलासपूर्ण जीवन अत्यन्त निन्दनीय है।" शिमले में ही एक ऐसी घटना हुई जिससे आपके मन को बड़ा धक्का लगा और भारतीयों के प्रति सहानुभूति और अधिक हो गई। इसका वर्णन करते हुए आपने लिखा है--"मैं जब पहली बार शिमला गया तो मैंने उर्दू सीखने का प्रबन्ध किया था। मुझे उर्दू पढ़ाने वाले एक वृद्ध मुसलमान थे, जिनका नाम मौलवी शमसुद्दीन था। आप लाहोर के रहने वाले थे और पहली ही बार शिमला आये थे। बहुत बूढ़े होने की वजह से वे शिमले की ठण्ड सहन नहीं कर सकते थे। इस कारण पावों में पट्टी बाँधते और बूट जूते पहिनते थे। मैंने मौलवी साहब की सिफारिश एक अँगरेज अफसर से करदी और वे उसको भी उर्दू पढ़ाने लग यह अफसर मौलवी साहब को इस बात के लिये मजबूर करता था कि वे पट्टी और जूते उतार कर उसके कमरे में घुसे, जब कि वह खुद बूट पहिने हुए पढ़ने को बैठता था। अफसर बिल्कुल जवान था और मालवी साहब बहुत वृद्ध थे। एक दिन सर्दी अधिक होने से मौलवी साहब बिना जूते उतारे अफसर के कमरे में चले गये। इस पर वह बड़ा नाराज हुआ और मौलवी साहब को बाहर जाकर जूते उतार आने की आज्ञा दी। इस तरह की बातें देखकर मेरे हृदय को बड़ा दुःख होता था और इस देशवासियों से मेरी सहानुभूति बढ़ती जाती थी।"

दूसरे वर्ष उनको गर्मी के मौसम में शिमले के निकट सनावर में रहकर एक फौजी स्कूल में प्रिंसिपल के पद पर काम करना पड़ा। वहाँ भी एक ऐसी ही घटना हुई जिससे आपको एंग्लोइंडियनों की अभद्रतापूर्ण मनोवृत्ति का परिचय मिला आपने अपना अनुभव वर्णन करते हुए लिखा है--"जिस मकान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में मैं रहा करता था उसी में गर्ल्स स्कूल की एक लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट आकर ठहर गई। पर जब तक मैं प्रिंसिपल था वह घर वास्तव मे मेरा ही था। मैंने मि० रुद्र को, जो उस समय दिल्ली में थे लिख दिया कि वे छुट्टियों में मेरे साथ आकर रहे। जब उस लेडी ने सुना कि मेरे एक हिन्दुस्तानी मित्र आने वाले हैं तो उसने कहा–'मैं किसी हिन्दुस्तानी के साथ एक मेज पर बैठकर खाना हरगिज नहीं खा सकती।' मैंने उसे समझाया–'आपकी बात ईसाई धर्म के बिल्कुल प्रतिकूल है। आपकी इतना अनुदार नहीं होना चाहिये।' जसे-तैसे समझा बुझाकर मैंने उसे राजी किया लेकिन जब वह शिमला गई तो वहाँ कुछ लोगों ने उसे बहका दिया। उन्होंने लेडी से कह दिया कि 'इस मामले में हर्गिज मत दबना।' मैं बड़ी आफत में पड़ गया वह लेडी मेरी अतिथि थी और सुपरिण्टेण्डेन्ट होने की वजह से उस घर में रहने का उसका कुछ अधिकार भी था। मैं मन में विचार करता था कि जब श्री रुद्र इस लेडी की इस बात को सुनेंगे तो क्या कहेंगे ?

मैंने फिर भी लेडी को समझाया 'पर अब वह भला क्यों मानने लगी ? मैं बड़ी दुविधा में था। इधर मैं इस काम को नही छोड़ सकता था क्योंकि विशप साहब से इसके लिये वायदा कर चुका था, इधर अपने प्रिय मित्र श्री रुद्र से विश्वास घात भी नहीं कर सकता था अन्त में मैंने सब मामला श्री रुद्र को लिख भेजा और साथ ही यह भी सूचित किया कि अगर आप उचित समझें तो मैं इस कार्य के लिये इस्तीफा देने को तैयार हूँ। श्री रुद्र ने तुरन्त मुझे उत्तर दिया कि 'आप हर्गिज ऐसा न करें। मैं कदापि किसी महिला को असुविधा उत्पन्न करना नहीं चाहूंगा।' परिणाम यह हुआ कि मि० रुद्र गर्मियों में सनावर न आ सके। इस घटना ने मेरी आँखें खोल दी कि पराधीनता के कारण भारतीयों को कितने अपमान सहन करने पड़ते हैं। मैं पूरी तरह मानता था कि रंगभेद के कारण ऐसा भेदभाव ईसाई धर्म के सर्वथा प्रतिकूल है। मेरी आत्मा मुझे दोषी बतलाती थी। यदि महात्मा गाँधी जैसी प्रबल आत्मा मुझमें होती तो मैं अन्त तक लड़ता और विरोध करता रहता, पर बहुत कुछ सोचने और श्री रुद्र का पत्र पा जाने के बाद मैंने दब जाता ही उचित समझा"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

 www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वास्तव में धर्म का सार अपने दैनिक व्यवहार में न्याय और नीति की स्थापना करना हैं। हमारे देश में तो लोग देशवासी और पड़ौसी होने पर भी ऊँच-नीच और छोटे-बड़े की इतनी अधिक भावना रखते हैं कि उसे मानवता के अहमान के सिवाय और कुछ नहीं कहा जा सकता। इस दृष्टि से श्री एण्ड-रूज का उदाहरण हमार उच्च जाति वालों के लिये विशेष रूप से शिक्षाप्रद है। यहाँ माले तो जो 'बड़प्पन' दिखलाते हैं यह अधिकांश में निरर्थक होता है। उनके पास न किसी तरह की योग्यता होती है, न कोई शक्ति, केवल जन्म और जाति के आधार पर वे झूँठा अभिमान दिखाया करते हैं, जिसको दूसरे लोग कुछ भी महत्व नहीं देते। पर श्री एण्डरूज ने सब कुछ साधन और शक्ति होते हुए भारतवासियों के साथ जो समानता का न्याययुक्त व्यवहार किया, वह उनकी महानता का ही प्रदर्शक था।

भारत के राष्ट्रीय-आन्दोलन से सम्पर्क—

इस तरह की घटनाओं से श्री एण्डरूज का ध्यान भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन की ओर जाने लगा। सन् १९०६ में जब बंगाल के दो टुकड़े कर देने के फलस्वरूप घनघोर स्वदेशी जान्दोलन उत्पन्न हुआ तो आपने 'हिन्दुस्तान रिव्यू' नामक मानसिक-पत्र में भारत की राष्ट्रीयता का समर्थन करते हुए एक लेख लिखा। इसको लोगों ने बहुत पसन्द किया और पुस्तकाकार छपवाकर वितरण कराया। यद्यपि उस समय उनके विचार बिल्कुल नर्म थे, तो भी भारतीय नेताओं ने उसे महत्त्वपूर्ण समझा. क्योंकि वह एक अँगरेज का लिखा हुआ था।

इसी वर्ष आप कलकत्ता कांग्रेस देखने गये जिसके सभापति स्व० दादा-भाई नौरोजी थे। वहाँ के अनुभवों के विषय में आपने लिखा कि "यहाँ मेरी भेंट पहली बार महात्मा गोखले से हुई। उनकी असाधारण नम्रता देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। जहाँ तक बन पड़ता वे अपने को पीछे ही रखते थे, अगुआ बनने की कोशिश नहीं करते थे। उस समय ब्रिटिश राज्य में मुझे बहुत अधिक विश्वास था, राजनीति में मेरे विचार 'माडरेटों' [नर्मदल वालों] में 'माडरेट'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की तरह थे। उन दिनों मैं ख्याल करता था कि लो० तिलक तथा श्री विपिन-चन्द्रपाल हद से ज्यादा गर्म हैं और श्री गोखले ही नेतृत्व के उपयुक्त हैं। समाचार-पत्रों में मैंने उनके सम्बन्धों में ऐसे ही विचार प्रकट किये थे। मेरे लेख को पढ़ने के बाद एक बार श्री गोखले ने एकान्त में मुझसे कहा था--'मैं इस बात को अधिक पसन्द करूँगा कि आप मेरे लिये 'लीडर' [नेता]शब्द का प्रयोग न किया करें। नेता बनने के लिये अभी मेरी उम्र बहुत कम है। आप सर फिरोजशाह मेहता, डी० ई० वाचा, दादाभाई नौरोजी आदि के लिये ही 'नेता' शब्द काम में लायें। उन्होंने मातृभूमि की सेवा करके इस पदवी को प्राप्त कर लिया है, मैंने अभी नहीं किया है।' इससे श्री गोखले की असाधारण नम्रता प्रकट होती थी। मैंने अपने जीवन में इतने योग्य व्यक्ति से ऐसी नम्रतायुक्त बातें नहीं सुनी थीं।

भारत की राष्ट्रीयता के सम्बन्ध में श्री एण्डरूज के विचारों का परिवर्तन बड़े मनोरञ्जक ढङ्ग से हुआ। सन् १९०६ में आपके विचार साम्राज्यवादियों की तरह थे और आप विश्वास करते थे कि भारत का हित ब्रिटिश-साम्राज्य के साथ रहकर ही हो सकेगा। पर धीरे-धीरे आप 'पूर्ण स्वाधीनता' के कट्टर सार्थक बन गये। सन्१९२० में महात्मा गाँधी ने अपने नागपुर कांग्रेस वाले भाषण में 'कांग्रेस के नये विधान' पर भाषण करते हुए कहा--

"इस प्रस्ताव में दोनों प्रकार के मनुष्यों के लिये स्थान है। इन नवीन विधानों के अनुसार वे लोग भी कांग्रेस में रह सकते हैं जिनका यह विश्वास है कि ब्रिटिश साम्राज्य के साथ भारत का सम्बन्ध बनाए रखकर हम अपनी और ब्रिटिश जनता दोनों की भलाई कर सकेंगे। इसके विपरीत जिन लोगों का ब्रिटिश---साम्राज्य में बिल्कुल विश्वास नहीं रहा है, वे भी इस बिधान के मुताबिक कांग्रेस में सम्मिलित हो सकते हैं। उदाहरण के लिए एण्डरूज की बात लीजिये, वे कहते हैं कि ब्रिटिश-साम्राज्य से सम्बन्ध रखकर भारतवर्ष को भलाई की कुछ आशा नहीं हो सकती। इसलिए भारत को उससे बिल्कुल अलग हो जाना चाहिए। काँग्रेस के इस नये विधान में श्री एण्डरूज के विचारों वाले व्यक्तियों के लिए भी स्थान है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अँगरेज अधिकारियों से मतभेद—

कलकत्ता कांग्रेस से लौटकर श्री एण्डरूज भारतीय राजनीति में जोरों से भाग लेने लगे और समय-समय पर समाचार-पत्रों में लेख लिखकर भारत-वासियों की माँगों का समर्थन करने लगे। इससे वे यहाँ के गोरों और ऐंग्लो-इण्डियनों की नजर में खटकने लगे। उनके कालेज के संचालकों ने भी उनसे राजनीतिक आन्दोलन में भाग न लेने को कहा। अपने जातीय भाइयों की ऐसी मनोवृत्ति देखकर आपको बड़ा खेद होता था और आपने सोच लिया कि जब तक सम्भव होगा तब तक मिशन की नौकरी करते रहेंगे, अन्त में इसे छोड़ना तो पड़ेगा ही। जब सन् १९०७ में पंजाब सरकार ने लाला लाजपत राय को देश निकाले का दण्ड दिया उस समय आपने इसका घोर विरोध किया और इसे जनता की स्वतन्त्रता अपहरण करने वाला कार्य बतलाया। आपने सार्व-जनिक सभा में एक भाषण दिया और कालेज की डिबेटिंग सोसाइटी की तरफ से एक मीटिंग करके सरकार के इस कार्य की निन्दा की। जब यह खबर समाचार-पत्रों में छपी तो सरकार और मिशन की तरफ से आपको डाँटा भी गया फिर जब छः महीने बाद लालाजी छोड़ दिये गये तो अपने कालेज में बड़े जोरों से रोशनी कराई। इससे दिल्ली के योरोपियन जलकर खाक हो गये और आप पर तरह-तरह के आक्षेप करने लगे।

राष्ट्रीय आन्दोलन के सिलसिले में आपको परिचय महात्मा मुन्शीरामजी (बाद में स्वामी श्रद्धानन्द) से हो गया और आप कई बार गुरुकुल काँगड़ी गये। हकीम अजमल खाँ से भी आपनी मित्रता हो गई। ऐसे लोगों के साथ मिलने जुलने से आपको भारतीय संस्कृति और यहाँ की परिस्थितियों का ज्ञान विशेष रूप से होता गया और हृदय में यह भावना प्रबल होती गई कि मिशन की नौकरी छोड़कर राष्ट्रीय आन्दोलन में पूरी शक्ति से लग जाना चाहिये। आप इस सम्बन्ध में लिखते हैं, "मैं प्रतिदिन अपने दिल में सोचा करता था कि यदि मैं स्वतन्त्रता की प्रेमी हूँ तो मुझे दूसरे लोगों की स्वतन्त्रता के लिये प्रयत्न करना चाहिये। यद्यपि उस समय तक मेरा यही ख्याल था कि पिछले जमाने में अंग्रेजी शासन द्वारा भारत का बहुत उपकार हुआ है, तो भी मैं यह मानता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

था कि किसी विदेशी जाति का सुशासन वास्तविक स्वतन्त्रता का मुकाबला नहीं कर सकता ।

"इस प्रकार के विचारों के कारण मेरी रुचि मिशन की नौकरी से भी हट रही थी । मिशन से मुझे वेतन मिलता था, पर जब कभी मैं वेतन लेता था, मुझे ऐसा मालूम होता था कि मैं अपनी स्वतन्त्रता बेचकर रुपये ले रहा हूँ । ये रुपये मुझे अपनी आत्मा पर एक भारी बोझ की तरफ मालूम पड़ते थे । विलायत के मिशन वाले मुझसे यह आशा करते थे कि मैं इस ढङ्ग से ईसाई धर्म का प्रचार करूँ जिसमे अधिक से अधिक हिन्दुस्तानी ईसाई बन सकें । यह 'ईसाई बनाना' मुझे बहुत ना पसन्द था । जहाँ तक मुझे स्मरण है मैंने अपने व्याख्यानों से शायद एक भी भारतवासी ईसाई न बनाया होगा । मेरा यह विश्वास पहले भी और अब भी है कि ईसाई धर्म के जिन सिद्धान्तों को मैं सत्य समझता हूँ, उनको सर्वसाधारण को बतलाना मेरा कर्त्तव्य है, पर किसी पर दबाव डालकर ईसाई बनाने से मैं घृणा करता हूँ । मैं प्रायः यह सोचा करता हूँ कि जब मैं मिशन वालों की आशा के अनुसार किसी को ईसाई बनाने में विश्वास ही नहीं करता तो उनसे रुपया लेना भी अनुचित है । मैंने श्री रुद्र से इस विषय में सलाह माँगी तो उन्होंने कहा कि तुम इस विषय की कुछ भी चिन्ता मत करो और अपना प्रोफेसरी का काम करते जाओ ।

सेवा व्रत के लिये हर प्रकार के कष्ट और हानि को स्वीकार कर लेने की भावना का एक परिणाम यह भी हुआ कि श्री एण्डरूज आजन्म कुँआरे गये । वैसे वे विवाह को मनुष्य के लिये स्वाभाविक और आवश्यक समझते थे पर उनका कहना था— "विवाह करने पर खर्च का सवाल उठता है और मेरी आमदनी इसके लिये काफी न थी । फिर मैं यह भी जानता था कि मिशन से मिलने वाले वेतन पर भरोसा करना खतरनाक है, क्योंकि अपनी अन्तरात्मा में मुझे उससे विराग होता जाता था । दूसरी बात यह भी थी कि मैं अपना सम्पूर्ण समय राष्ट्रीय आन्दोलन में लगा देना चाहता था जो विवाह करने पर संभव न था । इस प्रकार मेरे विवाह न करने कारण व्यावहारिक और आर्थिक थे । मैं अब भी यह अनुभव करता हूँ कि इस प्रकार मैं जीवन की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक सर्वोत्तम वस्तु 'गृहस्थ-जीवन' से वन्चित रह गया। अगर सन्तोष है तो यही कि इस प्रकार जो हानि हुई उसकी कमी अन्य दिशाओं में लाभ होने से पूरी हो गई।"

इस बात से हमारे उन भाइयों को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये जो केवल लकीर पीटने को तरह गृह-त्याग और संन्यास आदि की प्रशंसा किया करते है। सच्ची बात यही है कि समाज की वास्तविक सेवा और परोपकार के कार्य गृहस्थ जीवन में रहकर ही किये जा सकते हैं। अविवाहित जीवन (ब्रह्मचारी) और गृहत्याग [संन्यासी] तो वास्तव उन बहुत ऊँची आत्माओं के उपयुक्त हैं जो स्वाभाव से मनुष्य मात्र में एकात्मा का अनुभव करते हैं और किसी की पीड़ा, कष्ट को देखकर व्यथित हो जाते हैं, उसे मिटाये बिना उनको चैन नहीं पड़ता। पर हमारे यहाँ जिस प्रकार अधिकांश व्यक्ति पेट भरने या अहङ्कार पूर्ति के लिये 'ब्रह्मचारी' ओर 'संन्यासी' बनते हैं, उससे तो कहीं अच्छा यही है कि गृहस्थ में रहकर ईमानदारी से परिश्रम करके अपनी रोटी कमाई जाय और उसी में से जितना बन पड़े दूसरों के हितार्थ भी खर्च कर दिया जाय।

पुलिस की दृष्टि--

श्री एण्डरूज भले ही असली अँग्रेज थे और ब्रिटिश सत्ता के समर्थक भी थे, पर भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने और भारतवासियों के साथ न्याय की माँग करना नौकरशाही की निगाह में काफी भयङ्कर अपराध था। वह ऐसे आदमी पर अंग्रेज होते हुए भी विश्वास नहीं कर सकते थे, इसलिये भारतीय नेताओं की तरह आपके पीछे भी खुफिया पुलिस लगा दी गई। इस विषय में आपने एक बार बतलाया था--

"ये खुफिया पुलिस वाले मुझे किस प्रकार तङ्ग करते थे इसके दो-एक उदाहरण काफी हैं। सन् १९०७ में मैंने खुद एक आदमी को अपनी मेज के खानों में हाथ डालते पकड़ लिया। जब मैंने उसे धमकाया तो उसने स्वीकार कर लिया कि "मैं सी० आई० डी० का आदमी हूँ और मुझे पुलिस अफसर ने आपके पीछे लगाया है।" मैंने एक बड़ा रोषपूर्ण पत्र डिप्टी कमिश्नर हमफ्रे साहब के पास भेजा। उन्होंने उत्तर में लिखा--'प्रिय एण्डरूज, वह आदमी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मेरी पुलिस का नहीं था, डैम खुफिया पुलिस का था।' दूसरा उदाहरण भी सुनिये--एक अंग्रेज नवयुवक पुलिस में नौकर था। शाम के वक्त एक दिन मेरी उससे मुलाकात हो गई। मेरी बात-चीत उसे रुचिकर जान पड़ी। मैंने उसे उपदेश दिया कि भारतवासियों के साथ सदा सहानुभूति रखो। जब वह जाने लगा तो मुझसे कहा कि "कल रात आप मेरे यहाँ भोजन कीजिये।" दूसरे दिन मैंने उनके यहाँ भोजन किया और उस दिन भी बहुत-सी शिक्षाएँ दीं। इसके बाद मुझे विश्वस्त सूत्र से पता लगा कि उस नवयुवक को उसके प्रधान अधिकारी ने बुलाकर कहा--"यह फायल लो और खुफिया पुलिस की तरफ से काम करो।" उस फायल पर मेरा नाम लिखा हुआ था। यह देखते ही उस नवयुवक ने कहा--"मैं हरगिज ऐसा नहीं कर सकता। कल रात श्री एण्डरूज मेरे यहां अतिथि थे। क्या आप चाहते हैं कि मैं अपने अतिथि के पीछे ही खुफिया का काम करूँ ?" कालेज में भी खुफिया पुलिस मेरा पीछा नहीं छोड़ती थी। मेरे दो विद्यार्थी, जिनसे मेरी अच्छी तरह जान-पहिचान थी, पीछे खुफिया पुलिस के जासूस निकले। एक तीसरे विद्यार्थी ने खुली अदालत में सबके सामने बयान देते हुए कहा--'मैं पुलिस के प्रधान अफसर के पास नौकरी के लिये प्रार्थना-पत्र लेकर गया। अफसर ने मुझसे कहा कि अगर तुम अपने कालेज में जासूसी का काम करो तो तुम्हें नौकरी मिल सकती है।' मैंने इन सब बातों को समाचार-पत्रों में प्रकाशित करा दिया, पर सरकार ने कुछ भी उत्तर न देकर चुप्पी साध ली।"

महाकवि रवीन्द्रनाथ से भेंट—

सन् १९१२ में श्री एण्डरूज का स्वास्थ्य अधिक खराब हो गया और डाक्टरों ने विलायत जाकर जलवायु परिवर्तन करने की सलाह दी। लन्दन में आपने भारतीय विद्यार्थियों की एक सभा में सुना कि महाकवि रवीन्द्रनाथ भी यहीं आये हुए हैं। यह सुनकर वे उनके दर्शनों को उत्कंठित हो उठे और पता लगाकर उनके निवास स्थान पर जा पहुंचे। संयोगवश उस समय महाकवि कहीं बाहर गये हुए थे, इससे भेंट न हो सकी। दूसरे दिन प्रसिद्ध आर्टिस्ट राथेनस्टीन के निवास स्थान पर उनकी कविताओं का पाठ होने वाला था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एण्डरूज साहब वहाँ पहुँचे। श्री रवीन्द्रनाथ ने उनको देखते ही बड़े प्रेम से भेंट की श्री एण्डरूज को यह देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि इंगलैण्ड के अनेक विद्वान् महाकवि का सम्मान कर रहे हैं। पर उन्होंने अनुभव किया कि लन्दन के कोलाहलपूर्ण वातावरण में महाकवि के स्वास्थ्य को हानि पहुँचेगी। इसलिये उन्होंने शहर से कुछ दूर देहात में एक मित्र के घर पर उनके रहने की व्यवस्था कर दी। महाकवि ने बड़ी खुशी से इस परिवर्तन को स्वीकार किया और कहा--मुझे शान्ति चाहिये। मुझे शान्तिमय जीवन का इतना अधिक अभ्यास हो गया है कि मेरे लिये बहुत बड़े नगर में ज्यादा ठहर सकना सम्भव नहीं। अब मैं यहाँ एक महीने तक रह सकता हूँ।" उस समय से महाकवि के साथ एन्डरूज का घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो गया जिसके फलस्वरूप अन्त में वे शान्ति निकेतन में ही जाकर रहने लगे।

दक्षिण अफ्रीका के आन्दोलन में सहायता

सन् १९१३ में दक्षिण अफ्रीका के भारतवासियों के आन्दोलन ने बड़ा गम्भीर रूप धारण कर लिया। वहाँ महात्मा गाँधी कई वर्ष से सरकार के अन्यायपूर्ण कानूनों के विरोध में सत्याग्रह कर रहे थे। जब वहाँ की सरकार हजारों हिन्दूस्तानियों को जेल में ठूँस दिया और कितने ही व्यक्ति जान से भी मारे गये तो भारतवर्ष में हलचल मच गई। प्रवासी भारतवासियों की सहानुभूति में सभायें होने लगीं और चन्दा इकट्ठा किया जाने लगा। इस सम्बन्ध में सबसे अधिक कार्य श्री गोखले कर रहे थे। श्री एण्डरूज भी उनको पूरा सहयोग देने लगे। कालेज से छुट्टी पाते ही वे उनके पास पहुँच जाते और बराबर आन्दोलन सम्बन्धी कार्यों में लगे रहते। एक दिन श्री गोखले ने कहा--"इस मामले में सम्पूर्ण भारत को एक हो जाना चाहिये। मैं चाहता हूँ कि दक्षिण अफ्रीका के प्रवासियों भारतवासियों को न्याय दिलाने के लिये हम लोग जो आन्दोलन कर रहे हैं उसमें कुछ योरोपियन भी भाग लेने लगें। क्या आप कुछ ऐसे योरोपियनों के नाम बता सकते हैं?" श्री एण्डरूज ने कहा कि 'मैं आज रात को ही कलकत्ता जाने को तैयार हूँ। वहाँ जाकर लार्ड विशप से इस विषय में सम्मति लूँगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब आप कलकत्ता पहुँचे तो मालूम हुआ कि लार्डविशप अस्पताल में हैं और उनका आपरेशन हुआ है। आपने विचार किया कि इस बीमारी की अवस्था में उनको कष्ट देना ठीक नहीं, आराम होने पर बातचीत की जायगी। पर विशप साहब को जब श्री ऐंडरुज के आने की खबर मिली तो उन्होंने फौरन इनको बुलाया। जब आपने श्री गोखले का सन्देश विशप साहब को सुनाया तो उन्होंने तुरन्त अपनी चैकबुक मँगाई और प्रवासी भारतवासियों के सहायता फन्ड में एक हजार रु० चन्दा लिख दिया। इसके बाद उन्होंने बिस्तर पर पड़े-पड़े ही भारतियों की सहानुभूति में एक सन्देश भी लिखवाकर समाचार पत्रों में प्रकाशनार्थ भिजवाया। विशप साहब की इस उदारता और मानव तावादी दृष्टिकोण का अन्य लोगों पर भी अनुकरणीय प्रभाव पड़ा और प्रवासिय के प्रश्न पर सरकारी कर्मचारियों तक ने सहयोग का भाव दिखलाया।

कलकत्ते से लौटते समय आप एक दिन शान्ति निकेतन में ठहरे और श्री रवीन्द्रनाथ से बातचीत करके यह निश्चय कर लिया कि अब मिशन की नौकरी छोड़कर शान्ति निकेतन में ही रहकर काम करूँगा। उसके पहले अगर आवश्यकता हुई तो दक्षिण अफ्रीका जाकर प्रवासियों के आन्दोलन में सहायता करूँगा, इसी आशय कर एक तार आपने उसी समय श्रीगोखले को भेज दिया। दिल्ली पहुंचते ही जब आप उनसे मिले तो उन्होंने कहा—"तुम्हारा तार बड़े मौके पर आया। इससे मालूम होता है कि परमात्मा इस कार्य में हमारी सहायता कर रहा है। आपके तार के साथ ही मुझे दक्षिण अफ्रीका से भी एक तार मिला कि वहाँ की हालत बहुत खराब है और महात्मा गाँधी सहित सब नेता गिरफ्तार कर लिये गये हैं। दक्षिण अफ्रीका के लिये आप कब रवाना हो रहे हैं?" श्री एन्ड्रूज ने कहा—"मैं आज रात को ही रवाना होने को तैयार हूँ।"

पर इस समय श्री एन्डरुज का स्वास्थ्य निर्बल था, क्योंकि कुछ समय पहले ही वे मलेरिया ज्वर से पीड़ित हो चुके थे। इसलिये प्रिंसिपल श्री रुद्र इस सम्बन्ध में विशेष चिन्तित थे। अन्त में उन्होंने इनके मित्र श्री पियर्सन को साथ में भेजने की व्यवस्था करदी उसी रात को वे दोनों कलकत्ता के लिये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रवाना हो गये। रास्ते में इलाहाबाद के स्टेशन पर श्री मदनमोहन जी मालवीय से मिलने आये और इस कार्य में सफलता के लिये आशीर्वाद दिया। कलकत्ते में महाकवि रवीन्द्रनाथ के दर्शन करके उनसे भी यात्रा के लिये अनुमति प्राप्त की। जहाज की यात्रा के सम्बन्ध में वे लिखते हैं—

"यह यात्रा बड़ी कष्टदायक थी, क्योंकि उसके कुछ ही पहले एक तूफान आ चुका था और सैकड़ों वृक्ष उखड़कर समुद्र में बह रहे थे। जहाजी-यात्रा में मैं प्रायः बीमार हो जाता हूँ, इस बार यह शिकायत और भी अधिक थी। इस पर भी जहाज के अन्य गोरे यात्री तथा अफसर अपनी बातों से हमको और तङ्ग करते रहते थे। वे लोग बार-बार कहा करते—'अफ्रीका पहुँचते ही जनरल स्मट्स तुम लोगों को जेल भेज देंगे!" इस जहाज में बहुत से हिन्दुस्तानी कुली भी दक्षिण अफ्रीका भेजे जा रहे थे। उनकी दशा बहुत बुरी थी, वे भेड़-बकरियों की तरह 'डेक' के एक कोने में भर दिये गए थे। दो दिन बाद एक कुली ने समुद्र में कूदकर अपनी जान दे दी। इसके बाद एक कुली और भी गायब हो गया। जो गोरा अफसर इन कुलियों की देखभाल करता था, उसने मुझसे कहा—'ये कुली बिल्कुल डैम-सुअर हैं। जितनी ही इन पर मेहरबानी करो उतनी ही ज्यादा तकलीफ ये देते हैं।' यह सुनकर मेरे हृदय को बड़ा धक्का लगा, लेकिन इसमें अधिक दोष अपना-भारतीयों का ही है। हमारे देश के 'आरकाटी' ही इनको बहका कर विदेश भेज देते हैं और हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते है।" इस प्रकार श्री एन्डरुज मन, वचन और कर्म से पूरे भारतीय बन गये थे और गोरों के विशेष अधिकारों को त्यागकर सब तरह की असुविधायें सहन कर रहे थे। अफ्रीका पहुँचने पर क्या हुआ यह भी उनके ही शब्दों में सुनिये—

"जब हमारा जहाज अफ्रीका के किनारे पहुँचा तो समुद्र तट पर कितने ही भारतीय दिखाई पड़े जो हमारा स्वागत करने को इकट्ठे हुए थे। वहां पर श्री पोलक भी मौजूद थे। जिनसे मैं दिल्ली में मिल चुका था। उनको देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि मैं समझता था कि वे जेल में होंगे। श्री पोलक ने बताया कि 'सब नेता छूट गये हैं।" मैंने तुरन्त पूछा—'मिस्टर गाँधी कहाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं ?' महात्माजी ने, जो पास ही खड़े थे, मुस्करा कर कहा—"मैं ही मिस्टर गाँधी हूँ।"

"उनके दर्शन करते ही मेरे अन्तःकरण में यही प्रेरणा हुई कि उनकी चरण रज अपने माथे पर लगा लूँ। तुरन्त ही मैंने उनके चरण छू लिये। महात्मा जी ने मन्द स्वर से कहा—'कृपया ऐसा न कीजिये, इससे मुझे लज्जित होना पड़ता है।' गाँधीजी सफेद धोती और कुर्त्ता पहने थे और उनका सिर मुंड़ा हुआ था। ऐसा जान पड़ता था मानो वे शोक-चिन्ह धारण किये हुये हैं। हम जहाज से उतरे ही थे कि अखबारों के रिपोर्टरों ने मुझे घेर लिया मैंने जानबूझ कर चुप्पी साध ली और किसी प्रकार जान बचा कर बाहर निकल गया।

पर यह बात चारों तरफ फैल गई कि मैंने सचमुच एक भारतवासी के पैर छू लिये हैं। फिर क्या था योरोपियन लोग तरह-तरह से मुझे कोसने लगे। एक सम्पादक महोदय ने तो मुझे टेलीफोन पर बुलाया और कहा-मैं आपसे कुछ प्रश्न करना चाहता हूं, कृपया 'इण्टर व्यू' दीजिये।' मैंने साफ इनकार कर दिया। इस पर एडीटर साहब कहने लगे—'बहुत अच्छा, मैं आपका यह वृतान्त पत्र में छापता हूं कि 'रैवरैंड महोदय ने झुककर अपनी ऊङ्गलियों में हिन्दुस्तानी के पैर तले की धूल मली और फिर उन उँगलियों को अपने माथे पर रगड़ा।' इसके बाद जो कुछ वर्णन सम्पादक जो ने टेलीफोन पर सुनाया वह इतना हास्यास्पद था कि मुझे आखिर उस सम्पादक के आफिस में जाना ही पड़ा। वहाँ उसने मुझे अपना व्याख्यान सुनाना आरम्भ किया। बड़े आश्चर्य से दोनों हाथ उठाकर वे मुझसे कहने लगे—"सचमुच मिस्टर एन्डरुज ! आप विश्वास कीजिये—मैं आपसे कहता हूँ—सचमुच मि० एन्डरुज ! हम लोग नेटाल में ऐसा कार्य कभी नहीं करते। मिस्टर एन्डरुज, मैं आपके इस काम को अत्यन्त बुरा समझता हूं, सचमुच बहुत बुरा।" कुछ समय तक तो मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मैं किसी स्कूल का छोटा लड़का हूँ और एडीटर साहब उसके हेडमास्टर हैं और बस अब मेरे हाथों पर बेंत पड़ने ही वाले हैं। उन्होंने जो सवाल किये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनका उत्तर तो मुझे देना ही पड़ा। दूसरे दिन मैंने देखा कि उन्होंने वे सब प्रश्नोत्तर दिये हैं और साथ ही यह भी लिख दिया है कि रैवरेंड महोदय ने हिन्दुस्तानी के पैरों की धूल अपने मस्तक पर लगाली।"

उस समय दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों में बड़ी हलचल मची थी, क्योंकि सत्याग्रह-संग्राम को फिर से शुरू करने की बातचीत चल रही थी। अगर यह शुरू होता तो भारतीयों को फिर बड़े कष्ट सहन करने पड़ते। इस बात की आशंका थी कि सत्याग्रहियों पर योरोपियन लोग गोली चलावेंगे। इस लिये श्री एण्डरूज ने सरकार और आन्दोलनकारियों में समझौता कराने की कोशिश की। उसी समय उनके पास तार आया कि विलायत में उनकी माता बहुत बीमार हैं और उनको वहाँ पहुंचना चाहिये। यह जानकर महात्मा गाँधी ने कहा कि "आपके सबसे पहले अपनी माता के पास पहुंच कर उनकी सेवा करनी चाहिये। हमारे शास्त्रों के अनुसार इस कर्त्तव्य-पालन से कभी विमुख नहीं होना चाहिये।" श्री एण्डरूज ने कहा कि या तो मैं समझौता कराके जाऊँगा और यदि सत्याग्रह छिड़ा तो स्वयम् भी उसमें भाग लूँगा।

उसी समय दक्षिण अफ्रीका में रेल वालों की एक बहुत बड़ी हड़ताल होने की घोषणा रेल कर्मचारियों के सङ्गठन की ओर से की गई। जनरल स्मट्स ने उसमे निबटने के ख्याल से भारतीय आन्दोलनकारियों से समझौता कर लेना उचित समझा और इसके लिये महात्मा गाँधी को बुलाया। यद्यपि उन दोनों में कई बातों पर मतभेद हुआ और महात्मा गाँधी वापस चले आए, पर श्री एंडरूज बराबर उद्योग करते रहे और दो-तीन दिन में समझौते पर दोनों के हस्ताक्षर करा दिये। कुछ समय बाद एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए महात्मा गाँधी ने कहा—

"मुझ से केप टाउन में अनेक लोगों ने बताया और मुझे भी इस प्रकार पूरा विश्वास है कि जिन-जिन राजनीतिज्ञों तथा प्रमुख नेताओं से श्री एण्डरूज मिले उन सबके हृदय को उन्होंने अपनी सच्चाई से बहुत प्रभावित किया। वे यहाँ थोड़े ही दिन ठहर सके पर उसी बीच में अनेक व्यक्तियों के हृदय में कर्त्तव्य-पालन का भाव प्रज्ज्वलित कर गये।" निःस्वार्थ कर्म का प्रभाव निस्संदेह ऐसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही होता है। दक्षिण अफ्रीका के गोरे यद्यपि उनके विरोधी थे तो भी उन्होंने समय उनकी कर्त्तव्य-निष्ठा के आगे झुकना ही पड़ा। यह एक ऐसी महत्त्व पूर्ण बात में जिसका ध्यान सभी सार्वजनिक जीवन में भाग लेने वालों को रखना चाहिये। यद्यपि अधिकांश व्यक्ति राजनीति में चालाकी और तिकड़म को आवश्यक समझते हैं, पर उनका परिणाम कभी स्थायी नहीं हो सकता। जनता का सच्चा सेवक सच्चाई से ही अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर सकता है।

फिजी के भारतवासियों का उद्धार--

दक्षिण अफ्रीका की यात्रा के पश्चात् श्री एण्डरूज का ध्यान शर्त्तबन्द प्रथा के अन्तर्गत विभिन्न टापुओं में कष्ट सहने वाले भारतीयों के प्रति आकर्षित हो गया। उस समये देश में फिजी के प्रवासी भारतवासियों पर अत्याचार होने के समाचार बहुत अधिक आ रहे थे। इस सम्बन्ध में आप शिमला जाकर भारत के वायसराय लार्ड हार्डिंग्ज से मिले। लार्ड हार्डिंग्ज बड़े सज्जन व्यक्ति थे और शर्तबन्दी की प्रथा की बुराइयों को समझते थे। पर उन्होंने कहा कि भारत सरकार की तरफ से जो जाँच कमेटी इसकी जाँच करने को फिजी भेजी गई थी उसने इस प्रथा को जारी रखने की सिफारिश की है, ऐसी दशा में मैं क्या कर सकता हूँ? श्री एण्डरूज ने कहा में स्वयम् फिजी जाकर जाँच करूँगा और वहां की रिपोर्ट आपके सामने पेश करूँगा।

शिमला से चलकर एण्डरूज साहब कलकत्ता में रवीन्द्रनाथ के पास पहुंचे और उनसे इस कार्य के लिये आज्ञा और आशीर्वाद माँगा। वे इससे प्रसन्न तो बहुत हुए पर उनको यह चिन्ता थी कि श्री एंडरुज अभी हाल में हैजे की बीमारी से बचकर उठे थे और काफी कमजोर हो रहे थे। फिर फिजी द्वीप की आबोहवा भी अस्वास्थ्यकर है। कुछ सोचकर विचार कर उन्होंने श्री पियर्सन को भी उनके साथ भेज दिया जिससे दोनों के सहयोग से काम जल्दी और अच्छी तरह पूरा हो जाय। बङ्गाल के गवर्नर लार्ड कारमाइकेल ने भी इन लोगों के लिये आस्ट्रेलिया के कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों के लिये परिचय-पत्र लिख

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



दिया कि—"ये दोनों सज्जन मानव-जाति की सेवा के भावों से प्रेरित होकर फिजी जा रहे हैं और बिल्कुल स्वतन्त्र रूप से जाँच करेंगे।"

सन् १९१५ के आरम्भ में दोनों सज्जन फिजी पहुँच गये और पालीनीशिया के बिशप साहब के अतिथि बने। बिशप साहब बड़े सज्जन और न्याय-प्रिय व्यक्ति थे, उन्होंने कुलियों को अपने बंगले पर आकर स्वतन्त्रतापूर्वक बात करने की इजाजत दे दी। पर श्री एण्डरूज और पियर्सन, दोनों के अँगरेज होने से फिजी के अशिक्षित भारतीयों के हृदय में विचित्र भय का संचार हो रहा था। वे इन दोनों सज्जनों से पहले यही पूछते थे—"क्यों साहब, क्या आप कुली हैं?" जब इस प्रश्न का अच्छी तरह समाधान कर दिया जाता तब वे खुलकर बातचीत करते थे। कुछ दिन बाद आप 'कलकत्ते वाले साहब' के नाम से प्रसिद्ध हो गये और दूर-दूर के व्यक्ति अपनी विपत्तियों का हाल सुनाने को आने लगे।

फिजी में भारतीय-समाज का नैतिक पतन देखकर आप को हार्दिक दुःख हुआ और इसका वर्णन करते हुए आपने अपनी प्रथम रिपोर्ट में लिखा।

"फिजी की भारतीय स्त्रियों का समुदाय एक ऐसी किश्ती के समान है जिसमें पतवार नहीं हैं, जिसका मस्तूल टूट गया हैं और जो चट्टानों की ओर बही चली जा रही हैं। अथवा वे एक ऐसी डोंगी के समान हैं जो एक बड़ी नदी की तेज धारा में नीचे की ओर चक्कर खाती जा रही हैं और जिसका कोई खिवैया नहीं है। फिजी की स्त्रियाँ एक पुरुष को छोड़कर फौरन दूसरे पुरुष के साथ चली जाती हैं ओर इस पति-परिवर्तन में उनको तनिक भी लज्जा अनुभव नहीं होती। वहाँ के हिन्दू-पुरुषों का समाज भी छिन्न भिन्न हो गया है और खास बात यह है कि ग्राम्य-जीवन वाला संगठन बिल्कुल नष्ट हो गया है। वे इस प्रकार रहते-सहते, चलने-फिरते और जीवन व्यतीत करते हैं, मानों कोई पृथक्-पृथक् निस्सहाय व्यक्ति हों। सामाजिक संङ्गठन का नाम निशान नहीं रहा है जात-पाँत बिल्कुल समाप्त हो गई है और उनके खाली स्थान को भरने के लिये कोई अन्य संस्था उत्पन्न नहीं है। स्त्रियों को खुले रूप से खरीदा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और बेचा जा सकता है, उनके लिये लोग लड़ते हैं, परस्पर ईर्ष्या करते हैं और हत्या तक कर डालते हैं। फिजी के हिन्दू अपनी इस अवनति और दुर्दशा को जानते तथा अनुभव करते है पर वहाँ के मजदूर जीवन की स्थिति ही ऐसी दूषित हैं कि वे इसका कोई प्रतिकार नहीं कर सकते ।"

फिजी के दक्षिणी भाग की आबोहवा स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छी नहीं है, पर श्री एण्डरूज को अधिकांश में वहीं रह कर काम करना पड़ा। इसलिये आपका स्वास्थ्य जो पहले ही निर्बल था फिजी में अधिक परिश्रम और दौड़धूप करने से और भी बिगड़ गया । फिर भी आप अपना कर्त्तव्य-पालन करते ही रहे और जाँच का काम पूरा करके ही छोड़ा।

फिजी से वापस आते समय जहाज में ही आपने रिपोर्ट लिखना आरम्भ कर दिया। भारतवर्ष की शासन-सभा में यह मामला शीघ्र ही पेश होने वाला था और आप चाहते थे कि उसके पहले रिपोर्ट छपकर सब जगह पहुँचा दी जाय जिससे कुली प्रथा के विरुद्ध लोकमत बन सके। जब जहाज आस्ट्रेलिया के सिडनी बन्दरगाह में पहुँचा तो आपको एक तार मिला कि "तुम्हारे पिता विलायत में बहुत बीमार है, बचने की आशा नहीं।" इससे आपकी चिन्ता और भी बढ़ गई । आपको भय हुआ कि जिस प्रकार दक्षिण अफ्रीका की यात्रा के समय माँ की मृत्यु हो गई थी और अन्त समय में उसे देख न सके वही बात पिता के विषय में भी न हो। आपने उसी समय तार द्वारा विलायत को उत्तर भेजा। कुछ समय बाद खबर आई कि 'अब पिताजी की तबीयत सँभल गई है, शीघ्र कोई खतरा नहीं।'

प्राणों की बाजी लगा दी—

दिल्ली पहुंचकर आपने लार्ड हार्डिंग्ज को रिपोर्ट दिखाई। उन्होंने कहा—"मैं आपकी इस रिपोर्ट के आधार पर विलायत में 'इंडिया आफिस' को तार भेजकर शर्तबन्द-कुली प्रथा को बन्द करने की आज्ञा मागूँगा। लेकिन एक बात मैं यह बतलाना चाहता हूँ कि आपका पक्ष बहुत प्रबल है, इसलिये आपको अपनी बातें कुछ घटाकर ही लिखनी चाहिये, बढ़ाकर नहीं।" उन्होंने लाट साहब की सलाह मानकर बड़ी सावधानी से रिपोर्ट लिखी। नतीजा यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हुआ कि कोई उनकी एक बात का भी खंडन न कर सका। और तो क्या फिजी के सरकारी अफसरों को भी उसकी सचाई माननी पड़ी। २१ मार्च, १९१६ को वायसराय ने कौंसिल में कुली-प्रथा बन्द करने का निश्चय किया तो एण्ड-रूज साहब को बड़ा आनन्द हुआ। पर लार्ड हार्डिंग्ज ने अपने भाषण में एक बात ऐसी कह दी थी जो सन्देहजनक थी। उन्होंने कहा था कि "अभी कुली-प्रथा के बन्द होने में कुछ देर लगेगी, किन्तु उसका अन्त होना निश्चित है।" श्री एण्ड-रूज ने सोचा कि दो-चार महीने की देर लग जायगी। पर बात कुछ और ही निकली जिससे उनको फिर एक बार उस दूरवर्ती टापू की यात्रा करनी पड़ी।

कुछ समय बाद जब वे महा कवि रवीन्द्रनाथ के साथ जापान की यात्रा को गये थे, उनको एक निजी पत्र मिला जिसमें लिखा था विलायत के इन्डिया-आफिस और कालोनियल आफिस (उपनिवेश मन्त्रालय) में यह गुप्त समझौता हो गया है कि 'अभी पाँच वर्ष तक कुलियों की भरती जारी रहेगी, उसके बाद इसके बन्द कर दिया जायगा।' यह पढ़कर आपको बड़ा धक्का लगा और आपने वह पत्र महाकवि तथा श्री पियर्सन को दिखाया। सब ने कहा—अब क्या हो सकता है? हमारी समझ में नहीं आता कि तुम अब क्या कर सकते हो? पर श्री एण्डरूज ने निश्चय कर लिया कि चाहे जितना परिश्रम करना पड़े, खतरा उठाना पड़े, पर इस नारकीय-प्रथा का अन्त करके ही चैन लेंगे। इसलिए जब श्री रवीन्द्रनाथ और श्री पियर्सन अमरीकाको रवाना हुए तो वे उनके साथ न जाकर भारत लौट आये।

यहाँ आते ही उन्होंने नये वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड को एक पत्र भेजा जिसमें इन्डिया आफिस और कालोनियल आफिस के गुप्त समझौते का जिक्र किया गया था। वायसराय साहब का उत्तर आया कि 'इस मामले पर विचार किया जायगा।' तीन महीने तक आप प्रतीक्षा करते रहे और फिर एक खुली चिट्ठी 'पायोनियर' में छपाई जिसमें सरकारी पत्र का उल्लेख करके उनको शीघ्र निर्णय करने का चैलेंज दिया गया था। इसके दो-चार दिन बाद भारत सरकार की तरफ से एक विज्ञप्ति प्रकाशित की गई कि "भारतवासियों को धैर्य रखना चाहिए। लार्ड हार्डिंग्ज ने कुली प्रथा के अन्त करने की घोषणा करते हुए कह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिया था कि इसके पूर्णतया अन्त करने में कुछ समय लगेगा ।" श्री एंडरूज ने समझ लिया सरकार की नीयत ठीक नहीं है और जब तक देशव्यापी आन्दोलन नहीं किया जायगा तब तक वह नहीं मानेगी ।

आपने इस आन्दोलन का श्रीगणेश प्रयाग से किया । पर आप लगभग साल भर से बिना विश्राम और अपने स्वास्थ्य का ख्याल किये इस कार्य में तन-मन से संलग्न थे, फलस्वरूप निर्बलता दूर हो ही नहीं पाती थी इसलिए प्रयाग पहुँचते ही आप अकस्मात् फिर बीमार हो गये । ऐसा जान पड़ता था कि आपको फिर वही हैजा हो गया है । आप इस समय डाक्टर तेजबहादुर स्प्रू के मकान पर ठहरे थे । एक वृद्ध डाक्टर जिनका नाम श्री बनर्जी था आपका इलाज करने को बुलाये गए । रात में डाक्टर साहब कई बार इनको देखने को आए और जब उन्होंने समझ लिया कि अब जान का खतरा नहीं है तभी वे सोये ।

दूसरे दिन सुबह श्री एण्डरूज को अपनी तबीयत कुछ ठीक जान पड़ी और वे चाहते थे कि कुली-प्रथा के उन्मूलन का समारम्भ शुरू होते समय वहाँ अवश्य उपस्थित रहें । पर डाक्टर बनर्जी ने उनको रोक दिया, क्योंकि ऐसा करने से प्राणों का पूरा खतरा था । ईश्वर की कृपा से उसी दिन श्रीमती सरोजिनी नायडू प्रयाग पधारीं । श्री एंडरूज ने उनके पास सन्देश, भेजा कि था, जिसका समस्त देश में बड़ा प्रभाव पड़ा । श्री एंडरूज यद्यपि उठ नहीं सकते थे तो भी उन्होंने बिस्तर पर पड़े-पड़े ही फिजी की शर्तबन्दी में बँधी स्त्रियों की मुक्ति के लिए एक प्रार्थना भारतीय स्त्रियों के नाम के वास्ते तैयार कराई । यह कई प्रान्तीय भाषाओं में छपाई गई और पचास-हजार प्रतियाँ तो केवल प्रयाग में ही बाँटी गई । उस समय प्रयाग में माघ मेला हो रहा था इससे ये पर्चे दूर-दूर तक पहुँच गए । इस प्रकार संयुक्त प्रान्त में कुली प्रथा के विरुद्ध जोरदार आन्दोलन खड़ा हुआ और उसकी जड़ हिल गई ।

कुलियों भारतीय विशेषतः दो ही प्रान्तों में होती थीं—संयुक्त प्रान्त और मद्रास । इसलिए संयुक्त प्रान्त में कार्य आरम्भ करके श्री एंडरूज सहज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मद्रास को रवाना हुए। वहाँ उन्होंने श्रीमती बेसेन्ट को फिजी की स्त्रियों की दुर्दशा की बातें सुनाई, जिन्हें सुनकर वे क्रोध और दुःख से विह्वल हो गई और उन्होंने लिखा— 'यदि जो कुछ श्री एण्डरूज ने कहा है कि वह सत्य है, तो बेतहर है कि हम सब जेल चले जायें पर इस शर्तबन्दी कुली प्रथा को न रहने दें। श्री मती बेसेन्ट और 'हिन्दू' के सम्पादक श्री कस्तूरङ्ग अटयर की सहायता से मद्रास में भी घनघोर आन्दोलन होने लगा। वहाँ से पूना जाकर अपने लो० तिलक और डा. भंडारकर की सेवामें प्रवासियों के उद्धार की प्रार्थना की। पूना की सभा में मुख्यवक्ता लो. तिलक ही थे और उनके प्रभाव से वहाँ कुली प्रथा को मिटाने के लिए एक संस्था की स्थापना कर दी गई।

पूना से अहमदाबाद पहुँचकर भी एण्डरूज ने महात्मा गाँधी को सब हाल सुनाया महात्मा जी ने यह सारा हाल सुनकर कहा—"मैं सब कामों को छोड़कर इस समय तुम्हारे आन्दोलन को चलाने का प्रयत्न करूँगा।" वहाँ कि सार्वजनिक सभा में फिजी के अभागे भारतीयों की दुःख गाथा सुनाते हुये अन्त में श्री एन्डरूज ने कहा-"गुजराती माताओं और सज्जनो! आज मैं आपके नगर में यह बात स्पष्ट कह देना चाहता हूँ, कि मैंने जो कुछ निवेदन किया है जो घटनायें सुनाई हैं, वे सब प्रमाणों के आधार पर हैं। मैं उन सबको प्रत्यक्ष देखकर आया हूँ। मेरी आत्मा को कुली प्रथा के इन पाप-कर्मों से बड़ी चोट पहुँची है। अगर इन दुराचारियों की बात जान लेने के बाद एक भी भारतीय स्त्री फिजी को भेजी जाय तो इसकी जिम्मेदारी भारत सरकार और भारतीय जनता की होगी। एक समय ऐसा आता है जब राजनीति और कानून की बातें उठाकर दूर रख दी जाती है और परमात्मा के सत्य आदेश के अनुसार काम करना पड़ता है। अब वही समय आगया है, वैसा ही अवसर हमारे सामने उपस्थित हुआ है।"

श्री एण्डरुज के देशव्यापी आन्दोलन और जोशीले भाषणों से भारत सरकार घबड़ा गई और उसने उनको भारत रक्षा कानून के अनुसार नजरबन्द करने का विचार किया। उनको तार देकर दिल्ली बुलाया गया। पहले तो वायसराय ने उनके कार्य पर बहुत नाराजी प्रकट की, पर सब बातें सुनकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्होंने कुली प्रथा को शीघ्र बन्द कराने का वायदा किया। श्री ऐंडरूज ने ऐसी व्यवस्था की कि महात्मा गाँधी वायसराय से मिलकर इस सम्बन्ध में बातचीत करें। यह बातचीत आशाजनक थी, पर आपने अपना आन्दोलन बन्द नहीं किया और घोषणा कर दी कि ३१ मई सन् १९७१ तक कुली प्रथा अवश्य बन्द हो जानी चाहिये, नहीं तो उसके बाद सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ करेंगे।

अपनी घोषणा को वास्तव में पूरा करने और अपना मामला और भी जोरदार ढंग से देश के सामने रखने के उद्देश्य से आप फिर फिजी गये। इस बार वहाँ के गवर्नर ने आपको फिजी से निकाल देने की धमकी दी क्योंकि आपके आन्दोलन से चारों तरफ फिजी की चर्चा और आक्षेप होने लगे थे। फिर भी आप अपना काम करते रहे और पहली बार की अपेक्षा बहुत अधिक बातें मालूम करके वापस लौटे। रास्ते में आस्ट्रेलिया ठहर कर वहाँ भी इस सम्बन्ध में भाषण दिये। आस्ट्रेलिया कि स्त्रियों ने मिलकर मिस गार्नहम नाम की विदुषी महिला को स्वतन्त्र रुप से जाँच करने को फिजी भेजा। मिस गार्नहम की जाँच से बड़ा लाभ हुआ, क्योंकि उसकी रिपोर्ट से श्री एण्डरुज की सब बातों का समर्थन हो गया और उनके अंगरेज विरोधियों को चुप हो जाना पड़ा।

इस दूसरी यात्रा में फिजी सरकार की कौंसिल का 'पत्र न० ५४' श्री० एण्डरुज के हाथ लग गया। इस पत्र में एक बड़ा भयंकर वाक्य यह था—'जब कि शर्तबँधी एक हिन्दुस्तानी स्त्री को तीन शर्तबंधे पुरुषों तथा इनके सिवा कितने ही बाहर वालों का भी काम चलाना पड़ता है, तो परिणाम स्वरुप गर्मी और सुजाक की बीमारियाँ फैलने में सन्देह किया ही नहीं जा सकता।" इस अकेले वाक्य ने कुली प्रथा का अन्त कराने में श्री एण्डरुज की बड़ी सहायता की। फिजी से लौटकर आप दिल्ली गये। वहाँ आपने वायसराय और भारत-सचिव माँटेग्यु से जो उन दिनों भारत आये हुए थे मुलाकात की। आपने फिजी कौंसिल का पत्र 'न० ५४' का कागज उनको दिखलाया। इस वाक्य को पढ़कर माँटेग्यु साहब कह उठे—"बस अब रहने दीजिये। यह वाक्य ही काफी है। इससे अधिक कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अन्त मे श्री एण्डरुज के अकथनीय परिश्रम और प्रयत्नों के फलस्वरुप २५ मई १९१७ को भारत सरकार ने एक विशेष आदेश द्वारा इस कलङ्कपूर्ण कुली प्रथा का सदा के लिये अन्त कर दिया। इसी दिन से फिजी के भारत-वासियों की दशा बदलने लगी । वहाँ के जो गोरे प्लैंटर (गन्ने की खेती करने वाले) शर्तबन्द कुलियों का शोषण करके धन कमा लेते थे, उनका धन्धा बन्द हो जाने से वे फिजी को छोड़कर चले गये और वहां की शासन व्यवस्था धीरे-धीरे भारतवासियों के हाथ में ही आ गई, जिससे वह भारत के एक स्वतन्त्र उपनिवेश की तरह बन गया ।

शर्तबन्द भारतीय कुलियों के लिये भारत में कई वर्षों से आन्दोलन हो रहा था और श्री तोताराम सनाढ्य की 'फिजी द्वीप में मेरे २१ वर्ष' नामक पुस्तक ने जनता में एक असन्तोष और रोष की लहर फैला दी थी, तो भी किसी का इतना साहस न था कि फिजी टापू में जाकर जांच पड़ताल कर सके और सब घटनाओं के प्रमाण इकट्ठे करके सरकार पर दबाब डाल सके । श्री एण्डरूज परिश्रम और कष्ट सहन की कुछ परवाह न करके जब इस कार्य में कूद पड़े और 'कार्य को पूरा करेंगे या इसी मे अपने को खपा देंगे' यह प्रण कर लिया तब कहीं जाकर इस पैशाचिक प्रथा से हमारा पीछा छूट सका । जो कोई अपने मे सर्वथा अनजान और भिन्न जातीय मनुष्यों के उद्धार के लिये इस प्रकार आत्म-बलिदान करने की प्रस्तुत हो जाता है उसे 'महामानव' के सिवाय और क्या कहा जा सकता है ? यदि श्री एण्डरूज और कोई कार्य न करके केवल एक यही कार्य कर गये होते तो भी वे युग-युग के लिए हमारे वन्दनीय माने जाते ।

मार्शल-ला के समय सहायता

सन् १९१९ के अप्रेल मास में महात्मा गाँधी सविनय कानून भङ्ग और असहयोग आन्दोलन के सिलसिले में पंजाब में भयङ्कर घटनायें हुईं और जलियाँ वाला बाग का यह कत्लेआम हुआ जो भारतवर्ष के इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा । जैसे ही पंजाब के अत्याचारों की खबर देश में फैली मि० एण्डरुज शान्ति-निकेतन से पंजाब के लिये रवाना हो गये पर रास्ते मेंही दिल्ली

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वालों ने आपको रोक लिया क्योंकि वहाँ की हालत भी बड़ी सङ्कटपूर्ण हो रही थी। ऐंग्लोइण्डियन पत्र उस समय राष्ट्रीय आन्दोलन के विरुद्ध विष वमन कर रहे थे और सरकार से कह रहे थे कि दिल्ली में भी मार्शल-ला जारी किया जाय। आपने हकीम अजमल खां, डाक्टर अंसारी, स्वामी श्रद्धानन्द के साथ मिल कर कठोर परिश्रम किया, तब कहीं जाकर दिल्ली की अवस्था सम्भल सकी। पंजाब में उस समय फौजी अधिकारियों की आज्ञा के बिना कोई नहीं जा सकता था। आप इसके लिये शिमला गये, पर वायसराय ने मिलना अस्वीकार कर दिया। कुछ दिन बाद अफगान युद्ध शुरू हो जाने पर वायसराय से आपकी भेंट हो सकी, पर उनका और समस्त सरकारी अधिकारियों का बर्ताव बड़ा रूखा था। वायसराय ने कटाक्ष करते हुए कहा—"भारतवर्ष में अँगरेज मात्र का जीवन पवित्र है किसी हिन्दुस्तानी का अँगरेज पर हाथ उठाना घोर अपराध है। भारत में अँगरेजों की जीवन-रक्षा के लिये जो कुछ सम्भव है वह मैं अवश्य करुँगा। पंजाब में नौ अँगरेज मारे जा चुके हैं और आप भी एक अंगरेज हैं। मैं नहीं समझता कि आप इस बात को किस प्रकार भूल सकते हैं?"

बड़ी कठिनाई से शिमला के अधिकारियों ने आपको पंजाब जाने की अनुमति दी। पर जैसे ही आप अमृतसर पहुँचे जनरल डायर के सिपाहियों ने आपको गिरफ्तार कर लिया। दिन भर दो गोरे सिपाही बन्दूक लेकर आप पर पहरा देते रह। संध्या होने पर आपको पंजाब से बाहर निकल जाने का हुक्म दिया गया। इस प्रकार पकड़े और निकाले जाने से यद्यपि आपका बड़ा अपमान हुआ, पर आपने इसकी पर्वाह नहीं की। आपने भारत को मातृभूमि हो मान लिया था और उसको सेवा करते हुए जेल भी जाना पड़े तो आप उसके लिये तैयार रहते थे।

मार्शल-ला समाप्त हो जाने पर आप पञ्जाब गये तो अत्याचार पीड़ित व्यक्तियों की सहायतार्थ बहुत काम किया। लाहौर के कितने ही विद्यार्थी शिक्षा संस्थाओं से निकाल दिये गये थे आपने समाचार-पत्रों में कई लेख लिखकर उनको फिर स्थान दिलवाया। गुजरान वाला के निवासियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर जो भारी जुर्माना हुआ था उसे आपने बहुत कुछ घटवा दिया और विधवाओं तथा असमर्थों के लिये बिल्कुल माफ करवा दिया। इसके बाद आप गाँव-गाँव घूमकर लोगों की कष्ट कथा सुनने और उनको सान्त्वना देने लगे। वहाँ के स्त्री पुरुष उनके पैर छूकर कहते 'तू साडा रब है' (तू हमारा भगवान् है।) श्री एण्डरूज के मुख पर जो गम्भीर शान्ति और धार्मिकता टपकती थी उसी से इन व्यक्तियों में ऐसा भक्ति भाव उमड़ पड़ता था।

आपने पंजाब में कितना काम किया और कितने लोगों की सहायता की उसका पूरा हाल कोई नहीं जानता। कुछ तो अपने स्वभाव से और कुछ तत्कालीन कठोर सरकारी नियन्त्रण के कारण उन्होंने अपना कार्य चुपचाप ही किया था। तभी उनके सम्बन्ध में महात्मा गाँधी ने लिखा था—श्री एण्डरूज ने पंजाब की जो सेवायें की हैं उनका अनुमान कर सकना असम्भव है। उनके सम्बन्ध में यह कहावत पूरी तरह चरितार्थ होती है कि उनका दाहिना हाथ नहीं जानता कि बाँये हाथ ने किसकी क्या भलाई की।'

श्री एण्डरूज जब तक जीवित रहे उनका सेवा का कार्य इसी प्रकार जारी रहा कभी वे भारतीयों की सहायतार्थ पूर्वी अफ्रीका दौड़कर जाते, कभी कलकत्ते के हड़तालियों की सहायता करने को पहुँच जाते, कभी आसाम के कुलियों को उनके घरों तक भेजने के लिये रेल बालों से स्वीकृति लेते फिरते। गरीबों के कष्टों को देखकर वे इतने द्रवित हो जाते थे कि अपने हानि-लाभ और कठिनाइयों का ख्याल किये बिना तुरन्त उनकी सहायता करने को दौड़ पड़ते थे।

सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है–

श्री एण्डरूज उन व्यक्तियों में से थे जो केवल पूजा, उपासना तथा अन्य धार्मिक रूढ़ियों के बजाय 'सेवा' को ही सर्वोच्च मानते हैं। जैसा भारतीय शास्त्रों में कहा गया है—'परोपकाराय सतां विभूतयः' वे आजीवन इसी आदर्श पर चलते रहे। उनका सेवाक्षेत्र किसी विशेष श्रेणी तक सीमाबद्ध नहीं था, वरन् जो कोई सेवा, सहायता का पात्र उनकी दृष्टि में आ जाता उसी का कष्ट मिटाने के लिये वे उठ खड़े होते थे।

भाई परमानन्द को राजनैतिक षड़यन्त्र के अभियोग में कालेपानी की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सजा हुई थी। सरकार ने उनके घर की सब वस्तुएँ भी जब्त करली थीं। इससे उनकी स्त्री कौर बच्चे बड़े कष्ट में जीवन बिता रहे थे। इस तरह के 'सरकार के विरोधी' या 'विद्रोही' को कोई महायता करने की हिम्मत भी नहीं करता था, क्योंकि उसे भय रहता था कि ऐसा करने में मैं सरकारी अधिकारियों तथा पुलिस की कुदृष्टि का शिकार बन जाऊँगा। पर श्री एण्डरुज को जब इस परिस्थिति का पता लगा तो वे निस्संकोच भाव से तुरन्त वहाँ पहुँचे और सब बातों का पता लगाकर कई पत्रों में भाई जी का पक्ष-समर्थन करते हुए एक लेख प्रकाशित कराया जिसमें कहा गया था—

"लाहौर में ऐसी कितनी ही छोटी-छोटी गलियाँ हैं जिनके नीचे के कमरों में सूर्य का प्रकाश कभी नहीं पहुँचता। इसी तरह की एक गली में और इसी तरह के एक प्रकाशहीन छोटे से कमरे में मैंने अभी भाई परमानन्द को स्त्री और उनके दो बच्चों को देखा है।

"वह कमरा बहुत ही छोटा था। गर्मी की वहाँ भरमार थी और अन्धकार का तो पूछना ही क्या ? यही उस बिचारी का घर था। निर्धनता का वहाँ साम्राज्य था। भाई परमानन्द की स्त्री गोद में अपने बीमार बच्चे को लेकर बैठी थी। उसके पास ही दूसरा बच्चा बैठा था जो बिल्कुल दुर्बल, निर्जीव और पीला था। उसकी माता ने कहा—छः महीने हुए मेरी बड़ी लड़की तपेदिक से मर गई और अब इस बच्चे को भी जीर्णज्वर आने लगा है।" उसका करुणोत्पादक स्वर सुनकर मेरा हृदय भर आया।

'पूछ-ताछ करने पर पता चला कि वह कुल १७) रु० मासिक पर अपनी गुजर कर रही है। वह आर्य समाज के एक वर्नाक्यूलर स्कूल में पढ़ाती थी। चार वर्ष से इसी प्रकार अपने कुटुम्ब का पालन कर रही थी।"

भाई परमानन्द के सम्बन्ध में श्री एण्डरुज के इस लेख से एक आन्दोलन उत्पन्न हो गया। इस सम्बन्ध में वे कई बार सरकारी अफसरों से भी मिले। अन्त में पंजाब के छोटे लाट सर एडवर्ड मैकलीगन ने उनकी सिफारिश की और भाई परमानन्द जी काले पानी से छूट आये। वे शान्ति निकेतन में श्री एण्डरुज का दर्शन करने आये और उन्होंने कहा—"एण्डरुज सचमुच बड़े तपस्वी हैं और उन्होंने मेरे साथ बड़ा उपकार किया है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

 www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसी प्रकार पञ्जाब के प्रसिद्ध राष्ट्रीय-पत्र 'ट्रिब्यून' के सम्पादक श्री कालीनाथ राय को जब जेल हो गई तो उनके छुटकारे के लिये भी श्री एण्डरूज ने बड़ी दौड़ धूप की और बड़ा प्रयत्न करके उनको छुड़ाया। इस अवसर पर लाला लाजपतराय ने जो उस समय अमरीका थे, वहाँ से श्री कालीनाथ राय के मुकदमे में सहायतार्थ एक हजार रुपये भेजते हुए म० गाँधी को लिखा--

"कृपया श्री एण्डरूज को मेरी तरफ से लिख दीजिये कि पंजाबियों की सहायता के लिये जो आदरपूर्ण कार्य वे कर रहे हैं उसके लिये मैं उनका कृतज्ञ हूँ। मैं चाहता हूँ कि वे मेरे हृदय के भावों से परिचित हो जायें। परमात्मा करे कि इङ्गलैण्ड में उनकी श्रेणी के, उनके जैसे मस्तिष्क और आत्मा के मनुष्य अधिकाधिक उत्पन्न हों।"

जब वे पञ्जाब में काम कर रहे थे, दक्षिण अफरीका और पूर्वी अफरीका में प्रवासी भारतवासियों की स्थिति दिन पर दिन खराब होती जाती थी। वहाँ के समाचार पाकर महात्मा गान्धी जी ने श्री एण्डरूज से कहा--"या तो आपको या मुझे दक्षिण अफरीका जाना पड़ेगा।" उन्होंने कहा—"यदि आपकी ऐसी ही आज्ञा है तो मैं जाने के लिये तैयार हूँ।" उस समय महात्मा गान्धी को पञ्जाब जाने की अनुमति मिल गई थी और मालवीय जी तथा प० मोतीलाल नेहरू भी वहाँ पहुँच गये थे। इसलिये श्री एण्डरूज ने पञ्जाब कार्य छोड़कर अफ्रीका जाने का निश्चय कर लिया। उनको विदा करने के लिये लाहौर के ब्राडला हाल में बड़ी विशाल सभा हुई। सभापति के आसन से श्री मालवीयजी ने कहा--"श्री एण्डरूज भारत के सच्चे बन्धु है। उन्होंने इस विपत्ति के समय हमारी बड़ी सहायता की है।"

श्री एण्डरूज सच्चे अर्थो में मानवतावादी और परोपकार-धर्म' के अनुयायी थे। जिस समय वे भारतवर्ष में आये, यहाँ पर अंग्रेजी सरकार की शक्ति और प्रभाव पूरे जोर पर था और यहाँ की साधारण जनता गोरे लोगों को किसी दिव्य लोक के निवासियों की तरह विशेष प्राणी समझा करती थी। अधिकांश गोरे भी अपने को यहाँ के लोगों की अपेक्षा बहुत 'ऊँचा' समझ कर यथासम्भव उनके सम्पर्क से दूर रहते थे। श्री एण्डरुज को भारत में आते ही उन लोगों ने यही शिक्षा दी थी कि 'नेटिव' (भारतीय) लोगों से ज्यादा घनि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



ष्ठता कभी न बढ़ाना, अन्यथा अँगरेजों की उनके ऊपर जो 'धाक' जमी हुई है, उसको धक्का लगेगा। पर श्री एण्डरुज ने कभी इस 'नेक सलाह' पर ध्यान न दिया और महात्मा ईसा के उपदेशानुसार 'मानव-सेवा' को ही सबसे बड़ा सत्कर्म समझा, चाहे वह संसार के किसी भी भाग में और किसी जाति के व्यक्ति की क्यों न हो। उनकी इस महानता को इस देश के प्रधान नेताओं ने अच्छी तरह समझा लिया था और वे इनका हार्दिक सम्मान करते थे। स्वयम् महात्मा जी से जब श्री एण्डरूज के जीवन चरित्र की भूमिका लिखने को कहा गया तो उन्होंने उत्तर दिया था—

श्री एण्डरुज और मेरे बीच सगे भाइयों से भी अधिक घना सम्बन्ध है, इसलिये जीवनी की भूमिका लिखना मेरे लिये सहज नहीं है। फिर भी मैं इतना कह सकता हूँ कि इस समय उनसे बढ़कर सच्चा और विनीत दूसरा कोई भारत भक्त विद्यमान नहीं है।'

महामना मालवीय जी का भी एण्डरुज साहब से बड़ा प्रेम था। श्री एण्डरुज कहते थे कि प्रवासी भारतवासियों के सेवा कार्य में श्री गोखले के बाद मुझे सबसे अधिक सहायता मालवीय जी से ही मिली है। इस कारण इन दोनों में बड़ी घनिष्ठता हो गई थी और आगे चलकर पंजाब में 'मार्शलला' के अत्याचार पीड़ित व्यक्तियों की सेवा करते हुए भी मालवीय जी से उनको बहुत अधिक सहायता मिली थी।

वास्तव में श्री एण्डरुज के मन में से जाति और देश के अन्तर की भावना सर्वथा मिट गई थी और वे एक सच्चे अध्यात्मवादी की तरह आत्मवत् सर्वभूतेषु' के सिद्धान्त का क्रियात्मक रुप में पालन करते थे जीवन के अन्तिम वर्षों में वे प्रायः श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शान्ति निकेतन में रहकर ही अध्यापन कार्य करते रहे। वे वहाँ धोती-कुर्ता पहन कर बङ्गाली की तरह ही रहते थे। जब ७७ वर्ष की आयु में कलकत्ते में उनका देहान्त हुआ तो उनकी शवयात्रा में हजारों भारतीयों ने सम्मिलित होकर जिस प्रकार हार्दिक भावना से श्रद्धाञ्जलि दी उसे देख कर सबके मुख से यही निकल रहा था—श्री एण्डरुज भारत माता के सबसे सच्चे पुत्र थे।"

मुद्रक—युग-निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-चरित्र जन-मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मङ्गल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन गाथाओं की अधिकाधिक जानकारी जन-कल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवम् आवश्यक मानी जाती रही है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है, उसमें महामानवों के जीवन-चरित्रों की सीरीज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन-चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन-चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को भी इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

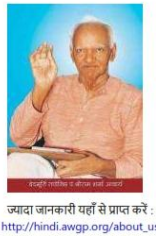

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org